डॉ. अनिरुद्ध प्रसाद
हिन्दी विभाग
महाराजा कॉलेज, आरा

14.07.20

महावीर प्रसाद द्विवेदी

IV Paper (P.G. Hindi semester II)

प्रश्न : आधुनिक हिन्दी खड़ी बोली के विकास में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी के योगदान की चर्चा करें।

उत्तर : हिन्दी साहित्य के निर्माणकर्त्ताओं में महावीर प्रसाद द्विवेदी का स्थान हमेशा अमर रहेगा। हिन्दी साहित्य में उनका योगदान अपना महत्व रखता है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र के देहावसान के बाद महावीर प्रसाद द्विवेदी हिन्दी साहित्य में अपनी विशिष्ट प्रतिभा लेकर आए थे। सन् 1903 ई० से महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' मासिक पत्रिका का संपादन आरंभ किया। उनका सम्पादक होना उस पत्रिका के लिए वरदान साबित हुआ। उन्होंने अपनी प्रतिभा से हिन्दी भाषा और साहित्य को इतनी ऊँचाई पर पहुँचाया कि आज भी हिन्दी भाषी उसपर गर्व करते हैं। द्विवेदी जी ने विविध साहित्यिक प्रयोगों के द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में काम करके हिन्दी भाषा और साहित्य को समृद्ध करने का काम किया।

आचार्य द्विवेदी के पहले हिन्दी भाषा में प्रायः प्रयोग होते रहे। भाषा का कोई ठीक रूप सामने नहीं था, लोग जैसे बोलते थे, वैसा ही लिखते थे। सर्वत्र उच्चारण सम्मत भाषा का ही बोलबाला था। राजा लक्ष्मण सिंह एवं राजा शिव प्रसाद द्वारा जो भी कार्य हुए थे उसको सुव्यवस्थित रूप देने का कार्य भारतेन्दु के द्वारा हुआ था। परन्तु यह कार्य काव्य के क्षेत्र में अधिक हुआ, गद्य का क्षेत्र सूना था।

आचार्य द्विवेदी के सामने एक खुला क्षेत्र सामने था। वे हिन्दी के एक प्रसिद्ध सम्पादक के पद पर बैठे थे। इसलिए तत्कालीन कवियों से उनका संपर्क बढ़ा। किसी भी साहित्य के क्षेत्र में भाषा का निर्माण अपना एक महत्व रखता है। इसी कारण से भाषा के शुद्धिकरण एवं मानकीकरण पर उन्होंने विशेष ध्यान दिया। ईशा अल्ला खाँ और भारतेन्दु के द्वारा इस स्तर पर प्रयोग होते रहे थे। भारतेन्दु के कार्य को उन्होंने समझा और भाषा के शुद्धिकरण का काम उन्होंने एक कुशल शिल्पक की तरह किया।

आचार्य द्विवेदी साधना और तपस्या के प्रति समर्पित व्यक्ति थे। उन्होंने भारतेन्दु काल की –

P.T.O

(2)

पृष्ठभूमि का अध्ययन कर अपने कार्य क्षेत्र को निश्चित किया। हिन्दी भाषा के उत्थान के लिए उन्होंने जीवन भर अपनी शक्ति का उपयोग किया। नए-एवं पुराने लेखकों की रचनाओं में भाषा-संशोधन एवं शुद्धिकरण पर बल दिया।

हिन्दी गद्य के निर्माण में आचार्य द्विवेदी का योगदान अतुलनीय है। उन्होंने अनेक गद्य शैलियों का निर्माण और परिष्कार किया। गद्य के क्षेत्र में यह विकास का युग कहलाता है। भारतेन्दु पहले भाव व्यक्त करने के पक्ष में थे, भाषा नहीं। व्याकरण की शुद्धता का अभाव भारतेन्दु की विभिन्न शैलियों में है। भारतेन्दु का युग प्रयोग-काल था। द्विवेदी काल की भाषा तथा वाक्य-शैली संस्कार का काल माना गया है। भारतेन्दु ने जिस खड़ी बोली को वैधानिक विधान की तरह बाँधा, उसे परिष्कृत और विकास के सोपान पर पहुँचाने वाले आचार्य द्विवेदी ही थे। उन्होंने भाषा को प्रौढ़ता दी। व्याकरण शुद्धि की शृंखला, शब्द-संस्कृत के महत्व को समझा तथा दुष्ट भावों को ठीक करने के लिए प्रौढ़ भाषा की के उत्तरदायित्व की ओर हिन्दी-भाषी लोगों का ध्यान खींचा। भाषा की व्यवस्था का गुरुतर भार अपने कंधों पर लेकर एक कुशल नेता की तरह उन्होंने हिन्दी को गौरव प्रदान किया।

द्विवेदी जी केवल भाषा के रूप से ही संतुष्ट न थे। उनके सामने हिन्दी के अनेक लेखक और कवि थे। उनका मार्ग-प्रशस्त करने का भार भी उनके ही कंधे पर था। द्विवेदी जी ने अनेक नए लेखकों की रचनाओं को रचनाओं अपनी पत्रिका 'सरस्वती' में छापा। और साहित्य के निर्माण के लिए एक वातावरण तैयार किया। उन्होंने खुद साहित्यिक और समीक्षात्मक निबंध लिखकर तत्कालीन साहित्य की गतियों तथा समस्याओं के प्रति लेखकों और पाठकों का ध्यान आकृष्ट किया। इस प्रकार उनका कार्य हिन्दी साहित्य के निर्माण की दृष्टि से अत्याधिक महत्वपूर्ण है।

हिन्दी साहित्य के युग प्रवर्तकों में आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी का नाम बड़े आदर के साथ लिया जाता है। उन्होंने हिन्दी साहित्य की रचना में ऐसा योगदान दिया कि आज भी हिन्दी प्रेमी उनके साधना के प्रति नत मस्तक हैं। देश-प्रेम, इतिवृत्तात्मक, राष्ट्रीयता का प्रचार-प्रसार उनके युग की रचनाओं का स्वर है।

P.G. II सेमेस्टर
CC - IX Paper
'Mahavir Prasad Dwedi ka yogdan'